SUSHANT UNIVERSITY ORGANIZED INTERNATIONAL CONFERENCE ON
"ADVANCES IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNVOATION" ICAMRI-2023
ON 28-29TH OCTOBER 2023
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

मृणाल पाण्डे कृत'निबन्ध संग्रहः'परिधि पर स्त्री'में नारी–व्यवसाय

शोधार्थी पीएच.डी.–मंजु बाला हिंदी विभाग,श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,हनुमानगढ़ ,राजस्थान–335801

प्रस्तावना

मृणाल पाण्डे जी ने कई निबन्ध लिखे जिसमें उन्होनें सभी वर्ग के लोगों की समस्याओं का वर्णन किया, लेकिन अपने निबन्धों में उन्होनें विशेष रूप से नारी की समस्यओं को उठाया है और यथानुसार उसका समाधान भी बताया है। यद्यपि मृणाल पाण्डे जी स्वयं कामकाजी महिला रही है अतः वे नौकरी या अन्य काम करने वाली महिलाओं की समस्याओं के और अधिक नजदीक है। इसलिए उनके निबन्धों में उन नीचे तबके की कामकाजी महिलाओं का चित्रण है, जिनका कि बड़े–बड़े कारखाने के मालिक लगातार आर्थिक शोषण करते है। पाण्डेय जी ने कर्नाटक के कन्नौर जिले में रहने वाली अनेक ऐसी महिलाओं का वर्णन किया जो कि सुबह से षाम तक काम करने के बावजूद इतना कम मेहनताना पाती है, परन्तु फिर भी कुछ नहीं कर पाती। पाण्डे जी ने अलग–अलग क्षेत्रों की महिलाओं की समस्याओं की ओर ध्यान दिलाया है। ये महिलाएं अगरबती, टोकरियां आदि बनाने का काम करती हैं मिल–मालिक इन्हें कम पैसे देते है और अपनी कम्पनी की मोहर लगाकर वही माल बाजार में उच्च दामों पर बेचते है, ''वे अपने जीर्ण–षीर्ण घरों झुग्गियों के भीतर बैठकर कताई, बुनाई, रंगाई, करने को बाध्य है। आज हर क्षेत्र में काम मशीनों द्वारा होता है, इससे छोटे–छोटे उद्योग धंधे चलाये जाने वाली महिलाएं बेरोजगार होती जा रही है। यहां पहली चीज जो हमें दिखती है, वह है, आयतित कृशि तथा खाद्य प्रसंस्करण सामग्री पर आयात शुल्क में भारी छूट। यानी सब सिलाई, गुड़ाई, दराई तथा कूट–पीस–छानन जैसे सैंकड़ों कृषि से जुड़े बे आनुशंगिक काम जो अब तक लाखों गरीब औरतों को रोटी दे रहे थे, सस्ते में आयतित मशीनों के सुपुर्द हो जाएंगे।[1] इस प्रकार जो महिलाएं मुश्किल से कमरतोड़ मेहनत करके अपना गुजारा चलाती है। उनके पेट पर ये मशीनें और सरकार लात मार देगी। इसके अतिरिक्त एक और समस्या पर विशेष रूप से ध्यान दिलाया गया, वह है महिला को मिलने वाली प्रसूति सुविधा। यद्यपि सरकार द्वारा कामकाजी महिलाओं के हित के लिए प्रसूति सुविधा कानून पास भी किया गया, परन्तु उसका लाभ पूरी तरह से सभी महिलाएं नहीं उठा रही और इस कानून का लाभ केवल शहर की कुछ औरतों को ही मिल पाता है, ''जहां तक हमारी कामकाजी औरतें द्वारा यह प्रसूति सुविधाएं सचमुच पाने की लत है, पड़ताल से पता चलता है कि वह तो वस्तुतः संगठित क्षेत्र में कार्यरत मुट्ठीभर शहरी कामकाजी औरतों को ही मिल पाती है। गांव कामगार औरतों ने तो शायद इस कानून का नाम भी नहीं सुना होगा।''[2] न ही शहर की महिला संगठन समितियां इस और ध्यान देती है कि गांव की मजदूर औरतों को भी उनके इन अधिकारों से अवगत कराया जाये। मृणाल पाण्डे ने कुछ ऐसी ही महिलाओं को समस्याओं का वर्णन भी किया जो सब्जी बेचने, कपड़े के बदले बर्तन बेचने जैसे छोटे–मोटे काम करती है। इन औरतों की समस्या यह हैं कि वे अपने काम को थोडा विस्तार देने के लिए बैंक आदि से कर्जा लेना चाहते है तो बैंक वाले उन पर विश्वास नहीं करते और किसी अमीर या बड़े आदमी की गारंटी की मांग करते है, इस प्रकार इन औरतों को अपने परिवार का पालन–पोषण करने के लिए जी–तोड़ मेहनत करनी ही पड़ती है। गुजरात में उन गरीब औरतों के लिए एक बैंक खोला गया और यह देखा गया कि अन्य लोगों के मुकाबले यह मजदूर औरतें कर्जा वापिस लौटाने में अधिक ईमानदार कि अन्य लोगों के मुकाबले यह मजदूर औरत चंदा बहन के शब्दों में, ''वो सोचते हैं कि ये गरीब चिंदी बेचने वाली औरतें ये पुराने कपड़ों के बदले बर्तन बेचने वली बहनें, ये फुटपाथ पर टोकरी रख के सब्जी भाजी बेचने वाली वाईयां, ये तो कर्जा लेकर लौटाएगी नहीं।''[3] झुग्गी बस्तियों में जहां ठोर किले उन्हें डेरा डालना होता हैं और फिर शुरू होती है। रोजी रोटी की एक लमबी कड़वी तलाश।''[4]

शरणार्थी महिलाएं उस देश या क्षेत्र के समाज से पूरी तरह परिचित नहीं होती और न हीं वहां के वातावरण को समझती है जिससे उन्हें छेड़छाड़, बलात्कार आदि का भी सामना करना पड़ता है जो

---

1 मृणाल पाण्डे, परिधि पर स्त्री, गरीबी का महिलाकरण, पृ.20
2 मृणाल पाण्डे, परिधी पर स्त्री, नारी तुम केवल उपभोक्त हो, पृ.63
3 वहीं, त्रिभुज के बारे में सोचते हुए, पृ.105
4 मृणल पाण्डे, परिधी पर स्त्री, महिला षरणार्थी की त्रासदी, पृ.49

कि महिलाओं की सबसे बड़ी समस्या है। शरणार्थी हाल में एक नौ साल की बांगला देश से भगाकर लाई गई बच्ची के साथ पुलिस साथ ही यह बात भी सामने आई कि कैसे कई दिनों तक राजधानी के बीचो बीच पुलिसकर्मियों द्वारा सामूहिक बलात्कार का जघन्य प्रकरण जब अखबारों ने उघाड़ा तो उसके साथ ही यह बात भी सामने आई कि कैसे कई दिनों तक राजधानी के बीचो बीच पुलिस कर्मियों द्वारा उस मासूम और सहमी हुई बच्ची का लगातार शोषण हो रहा था।''[5] अरब देशों में कई अमीर अरबी अपनी नौकरानियों पर अमानुशिक अत्याचार करते हैं। ऐसी स्थिति में एक तरफ तो महिलाएं दयनीय स्थिति से गुजरती हैं तो दूसरी तरफ समाज भी उनहें घृणा की दृष्टि से देखता है। ''भारत के दूरदराज के गांवों में मोटे तौर से आज भी हालात ऐसे हैं कि यदि आप एक दलित हैं, उस पर औरत जात, तो प्रताड़ना और उत्पीड़न आपके जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनते चले जाते हैं। अधिकतर औरतें इसे अपनी नियति मानकर हर तरह के अत्याचार और अन्यायों को मूक होकर झेलती आई हैं।''[6]

निष्कर्ष:

कहा जा सकता है कि मृणाल पाण्डे जी की मान्यता हैं कि ऐसी औरतों की सोच पुरूषों से कहीं अधिक विशाल और उदार होती हैं,जो अपने साथ–साथ बाकी अपने जैसी महिलाओं की भी मदद करती है, जबकि सरकार की नजरों में ऐसी कामकाजी महिलाओं की कोई अहमियत नहीं। अकार महामारी के प्रकोप के कारण गांव के गांव, कई शहर तक उजड़ जाते हैं, यहां के रहने वाले लोग अपने घर बार सब कुछ छोड़ दूसरे क्षेत्रों में जाकर षरण लेते है, जहां उनकी दशा अत्यंत दयनीय हो जाती है। इन्हें प्रवासी माना जाता है। ''यह बेसहारा स्त्रियां जब प्रायः अपने परिवार समेत अनजाने पड़ोसी राज्य या देश में पहुंचते है तो वहां उनकी हैसियत प्रवासी घुसपैठिए की होती है। लिहाजा नागरिक के रूप में वे अमान्य ही रहती है।

5 वहीं, पृ.50
6 वहीं, भंवनी नाम है एक मजर का, पृ.41